गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 179
दि. 31.10.2025,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

‘मोंथा’ चक्रवात ने आंध्र प्रदेश को दी भारी चोट, 5,265 करोड़ का नुकसान

मुख्यमंत्री नायडू ने कहा “समय रहते उठाए कदम”

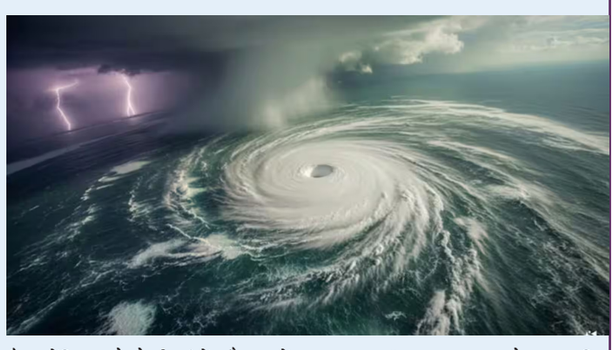

(जीएनएस)। अमरावती। चक्रवात ‘मोंथा’ ने आंध्र प्रदेश को आर्थिक रूप से बुरी तरह झकझोर दिया है। राज्य सरकार के शुरुआती आंकड़ों के अनुसार, इस तूफान से लगभग 5,265 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने गुरुवार को आपदा की समीक्षा बैठक के बाद बताया कि “अगर समय रहते सतर्कता नहीं बरती जाती, तो यह तबाही और बड़ी होती।”

उन्होंने कहा कि “सरकार की तैयारी और प्रशासन की तत्परता की वजह से इस बार हजारों जानें बचाई जा सकीं।”

मुख्यमंत्री ने बताया कि चक्रवात के चलते कृषि क्षेत्र को 829 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है, जबकि सड़क एवं भवन विभाग (आरएंडबी) को 2,079 करोड़ रुपये की क्षति पहुंची है। वहीं बिजली, आवास और ग्राम पंचायत विभागों को भी भारी नुकसान उठाना पड़ा है। नायडू ने कहा कि “हमने आपदा प्रबंधन के हर स्तर पर तकनीक का इस्तेमाल किया — ड्रोन सर्वे, जियो-टैगिंग और वास्तविक समय की रिपोर्टिंग से राहत कार्यों में पारदर्शिता आई।”

उन्होंने बताया कि पहले जहां तूफान के बाद बिजली बहाल होने में 10 घंटे या उससे अधिक लग जाते थे, वहीं अब सिर्फ तीन घंटे में बिजली सप्लाई बहाल कर दी जा रही है। उन्होंने कहा कि “यह बदलाव हमारी तैयारी का प्रमाण है। पेड़ गिरे, तार टूटे, लेकिन हमारी टीमें तुरंत मौके पर पहुंचीं और रास्ते साफ किए।”

नायडू ने बताया कि सिंचाई विभाग को इस बार अपेक्षाकृत कम नुकसान हुआ है, क्योंकि पहले से ही बांधों और नहरों की सफाई कर दी गई थी। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता, लेकिन अगर समय रहते कदम उठाए जाएं तो नुकसान काफी हद तक कम किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रभावित परिवारों के लिए मुफ्त चावल, राहत शिविरों में रहने की सुविधा और हर परिवार को 3,000 रुपये की सहायता राशि दी जा रही है। उन्होंने कहा कि “हमारा लक्ष्य है कि हर प्रभावित परिवार को जल्दी से जल्दी उनके घर लौटाया जाए और खेतों की बहाली में मदद की जाए।”

इस बीच, राज्य के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने कृष्णा जिले के अवनीगड्डा निर्वाचन क्षेत्र के कोडुर मंडल का दौरा किया, जहां उन्होंने क्षतिग्रस्त फसलों और गांवों की स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने फसल क्षति की फोटो प्रदर्शनी देखी और कहा कि “मुख्यमंत्री की दूरदर्शिता और समय पर चेतावनी से नुकसान काफी हद तक सीमित किया जा सका।” पवन कल्याण ने बताया कि चक्रवात से करीब 60,000 हेक्टेयर फसल बर्बाद हुई है — जिसमें 46,000 हेक्टेयर धान की फसल और 14,000 हेक्टेयर बागवानी फसलें शामिल हैं। उन्होंने कहा कि “पंचायत राज विभाग को भारी नुकसान पहुंचा है और गांवों की सड़कों की मरम्मत युद्धस्तर पर कराई जाएगी।” राज्य सरकार ने केंद्र से आपदा राहत सहायता की मांग की है और जल्द ही नुकसान का विस्तृत रिपोर्ट दिल्ली भेजने की तैयारी कर रही है। इस बीच, मुख्यमंत्री ने जिला कलेक्टरों को निर्देश दिए हैं कि वे हर गांव में राहत कार्यों की निगरानी करें और सुनिश्चित करें कि कोई भी परिवार सहायता से वंचित न रहे।

चक्रवात ‘मोंथा’ भले ही गुजर चुका है, लेकिन उसकी मार की गूंज अब भी आंध्र प्रदेश के तटीय इलाकों में सुनाई दे रही है — टूटी सड़कें, गिरे पेड़, बर्बाद फसलें और उखड़ी छतें इस तूफान की भयावहता की गवाही दे रही हैं।

कुशीनगर की धरती से लहराया अंतरिक्ष नवाचार का परचम देशभर के युवाओं ने दिखाई प्रतिभा

(जीएनएस)। देवरिया। उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक जनपद कुशीनगर की धरती ने गुरुवार को भारत के अंतरिक्ष इतिहास का एक और गौरवशाली अध्याय लिखा। नारायणी नदी के तट पर आयोजित “IN-SPACe मॉडल रॉकेट्री और कैनसैट इंडिया स्टूडेंट कम्पटीशन 2024-25” का भव्य समापन देश के भविष्य को नई दिशा देने वाला साबित हुआ। चार दिनों तक चले इस अनोखे आयोजन में देशभर के युवा वैज्ञानिकों ने अपने नवाचार और तकनीकी कौशल से आसमान को छूने का सपना साकार किया। यह प्रतियोगिता भारत में छात्र-नेतृत्व वाले अंतरिक्ष नवाचार आंदोलन की मिसाल बनी, जहां स्कूली और कॉलेज स्तर के छात्रों ने अपने हाथों से डिजाइन किए मॉडल रॉकेट और मिनी सैटेलाइट (कैनसैट) लॉन्च कर यह साबित किया कि भारत की नई पीढ़ी वैज्ञानिक क्षमता और रचनात्मकता के शिखर पर है।

देश के कोने-कोने से जुटे युवा वैज्ञानिक

चार दिवसीय राष्ट्रीय फिनाले में देश के कुल 67 छात्र दलों ने हिस्सा लिया, जिनमें 31 टीमों ने मॉडल रॉकेट्री और 36 टीमों ने कैनसैट श्रेणी में प्रतिस्पर्धा की। इस दौरान कुल 37 सफल प्रक्षेपण हुए — जिनमें 13 रॉकेट और 24 कैनसैट लॉन्च शामिल थे। हर टीम ने अपने डिजाइन, उड़ान पथ नियंत्रण, टेलीमेट्री डेटा संचार और रिकवरी तकनीक में असाधारण दक्षता का प्रदर्शन किया। कई रॉकेट 2,000 फीट से अधिक ऊंचाई तक पहुंचे और सुरक्षित लैंडिंग की प्रक्रिया के दौरान पैराशूट सिस्टम और सेंसर-संचालित तकनीक का प्रदर्शन किया गया। प्रतिभागियों में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, पंजाब, दिल्ली, असम और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों के छात्र शामिल थे।

इसरो और IN-SPACe की संयुक्त पहल ने जगाई नई उम्मीदें

यह प्रतियोगिता देवरिया सांसद शशांक मणि त्रिपाठी की पहल पर और IN-SPACe, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) तथा एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (ASI) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई। कार्यक्रम को उत्तर प्रदेश सरकार और कुशीनगर जिला प्रशासन का भी पूर्ण सहयोग मिला। मुख्य अतिथि के रूप में IN-SPACe के चेयरमैन डॉ. पवन गोयनका, इस्ट्रैक (ISTRAC) निदेशक ए.के. अनिल कुमार, और भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ. गोयनका ने कहा, “यह आयोजन भारत की नई वैज्ञानिक चेतना का प्रतीक है। आने वाले दशक में अंतरिक्ष केवल वैज्ञानिकों का नहीं, बल्कि छात्रों का भी क्षेत्र बनेगा।”

मुंबई में ऑडिशन के बहाने बच्चों को बंधक बनाने वाला आरोपी पुलिस मुठभेड़ में ढेर, एक घंटे चला बचाव अभियान

(जीएनएस)। मुंबई में गुरुवार को हुई एक दिल दहला देने वाली घटना ने पूरे देश को सकते में डाल दिया। पवई इलाके के एक एक्टिंग स्टूडियो में 17 बच्चों सहित 19 लोगों को बंधक बनाने वाले आरोपी रोहित आर्या को पुलिस ने एक घंटे चले तनावपूर्ण रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद मुठभेड़ में ढेर कर दिया। पुलिस ने सभी बंधकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया, लेकिन इस घटना ने मुंबई जैसे महानगर की सुरक्षा व्यवस्था पर कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

दोपहर करीब सवा एक बजे पुलिस को कॉल मिली कि पवई स्थित महावीर क्लासिक बिल्डिंग में आर ए स्टूडियो के भीतर एक व्यक्ति ने कई बच्चों को बंधक बना रखा है। सूचना मिलते ही पुलिस की टीमें मौके पर पहुंचीं। कानून-व्यवस्था के संयुक्त आयुक्त सत्यनारायण के नेतृत्व में विशेष दस्ता, क्यूआरटी, बम निरोधक दस्ता और दमकल विभाग की टीमें तुरंत सक्रिय हो गईं। आरोपी से कई बार बातचीत की कोशिश की गई, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। अंदर से बच्चों के रोने और चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं, जिससे माहौल और भयावह हो गया। करीब एक घंटे बाद पुलिस टीम ने बाथरूम की दिशा से स्टूडियो में प्रवेश किया। वहां आरोपी रोहित आर्या हाथ में एयर गन और कुछ रासायनिक पदार्थ लिए खड़ा था। पुलिस ने उसे सरेंडर करने का मौका दिया, लेकिन उसने इनकार कर दिया और बच्चों को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी। तभी पुलिस की जवाबी कार्रवाई में उसे गोली लगी। घायल आरोपी को जोगेश्वरी ट्रॉमा अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। आरोपी ने बच्चों को एक वेब सीरीज के ऑडिशन के बहाने बुलाया था। उसने सोशल मीडिया पर एक लाइव वीडियो डालते हुए कहा था कि उसे पैसे नहीं चाहिए, लेकिन वह कुछ लोगों से बात करना चाहता है। उसने धमकी दी थी कि अगर उसकी बात नहीं सुनी गई तो वह स्टूडियो में आग लगा देगा। वीडियो के बाद पूरे इलाके में दहशत फैल गई। कई अभिभावक अपने बच्चों को बचाने के लिए रोते-बिलखते स्टूडियो के बाहर पहुंचे, लेकिन पुलिस ने किसी को पास नहीं आने दिया। जानकारी के अनुसार, आरोपी रोहित आर्या पुणे का रहने वाला था और कभी शिक्षा विभाग के एक प्रोजेक्ट “माय स्कूल ब्यूटीफुल स्कूल” से जुड़ा हुआ था। उसका आरोप था कि पूर्व शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर के कार्यकाल में उसे एक स्कूल के टेंडर का भुगतान नहीं मिला, जिसके चलते वह आर्थिक संकट और मानसिक तनाव से गुजर रहा था। इसी नाराजगी के चलते उसने यह खतरनाक कदम उठाया। हालांकि, दीपक केसरकर ने उसके आरोपों को पूरी तरह गलत बताया। उन्होंने कहा कि भुगतान चेक के माध्यम से पहले ही कर दिया गया था, और सरकारी प्रक्रियाएं पूरी तरह पारदर्शी थीं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घटना की जानकारी लेते हुए कहा कि पूरी घटना की जांच की जाएगी और विस्तृत रिपोर्ट जल्द सार्वजनिक की जाएगी। कांग्रेस ने इसे राज्य में कानून-व्यवस्था की विफलता बताया। वहीं उद्योग मंत्री उदय सामंत ने कहा कि चाहे कोई भी कारण हो, निर्दोष बच्चों को बंधक बनाना एक जघन्य अपराध है और पुलिस ने सही फैसला लिया।

कांग्रेस सांसद वर्षा गायकवाड़ ने आरोपी के प्रति सहानुभूति जताई और कहा कि आर्थिक दबाव किसी को अपराध की ओर धकेल सकता है, लेकिन सरकार को ऐसे तनाव झेल रहे लोगों की मानसिक स्थिति सुधारने के लिए कदम उठाने चाहिए।

यह पूरी घटना केवल एक अपराध नहीं बल्कि सामाजिक और प्रशासनिक तंत्र की कमजोरी का आईना है। एक व्यक्ति की हताशा किस तरह समाज के लिए खतरा बन सकती है, यह इस घटना से साफ झलकता है। पुलिस की तत्परता से सभी बच्चे सुरक्षित हैं, लेकिन यह सवाल जरूर कायम है कि अगर एक असंतुलित व्यक्ति इस तरह बच्चों को बंधक बना सकता है तो भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कौन-से ठोस कदम उठाए जाएंगे।

राहुल गांधी का नीतीश सरकार पर तीखा प्रहार : बिहार को मजदूर नहीं, निर्माता बनाना है

(जीएनएस)। नालंदा की ऐतिहासिक भूमि पर गुरुवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चुनावी माहौल को नई दिशा दे दी। विशाल जनसभा में उमड़ी भारी भीड़ के बीच उन्होंने जदयू-भाजपा गठबंधन सरकार पर तीखा हमला करते हुए कहा कि बिहार के युवाओं को अब मजदूर नहीं, निर्माता बनना होगा। राहुल ने दावा किया कि पिछले 20 वर्षों से सत्ता में बैठे लोगों ने बिहार के सपनों को कुचल दिया और उसके युवाओं को पलायन के लिए मजबूर कर दिया। राहुल गांधी ने अपनी बात शुरू करते हुए कहा, “बिहार के युवा दुबई, मुंबई और दिल्ली में पुल, सड़कें और इमारतें बना रहे हैं। सवाल यह है कि जब वे दुनिया को बना सकते हैं, तो अपने बिहार को क्यों नहीं बना सकते? क्योंकि भाजपा-जदयू सरकार ने यहां के लोगों से अवसर छीन लिए हैं।” उन्होंने कहा कि जिस राज्य ने देश को लोकतंत्र, ज्ञान और संस्कृति दी, वह आज बेरोजगारी और पलायन का केंद्र बन चुका है। उन्होंने नीतीश कुमार पर व्यंग्य करते हुए कहा, “आज नीतीश जी को जो सूट होता है, वही चैनल देख लेते हैं। मोदी बटन दबाते हैं, तो नीतीश चैनल बदल देते हैं।” यह टिप्पणी सुनते ही सभा में तालियों और नारों की गूंज उठी। राहुल ने कहा कि बिहार की पहचान कभी नालंदा और तक्षशिला जैसे शिक्षा के प्रतीकों से होती थी, लेकिन आज इसे ‘पेपर लीक’ और भ्रष्टाचार से जोड़ा जा रहा है। उन्होंने युवाओं से कहा कि अब वक्त है बदलाव का।

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

गुजरात में बहुआयामी विकास को गति देने के लिए एक बड़ा कदम

सरदार पटेल गुड गवर्नेन्स सीएम फेलोशिप

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भूपेंद्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

गुजरात सरकार युवा प्रतिभाओं को आमंत्रित करती है

राज्य प्रशासन में प्रतिभाशाली युवाओं के नवीन विचारों का होगा सदुपयोग

प्रोजेक्ट

- सीएम फेलो अपने नवीन व अभिनव विचारों और अद्वितीय कौशल के साथ प्रोजेक्ट्स में योगदान देंगे

उम्मीदवारों की चयन प्रक्रिया

- ३५ वर्ष से कम आयु के उम्मीदवार जिन्होंने ६०% या उससे अधिक अंकों के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की है और उनके पास न्यूनतम ३ वर्ष का अनुभव है
- सीएम फेलोशिप उम्मीदवारों का चयन सिलेक्शन कमिटी करेगी
- कमिटी में एक्सपर्ट पैनलिस्ट के रूप में IIM-Ahmedabad के विशेषज्ञ होंगे

प्रशिक्षण

- सीएम फेलो को गुजरात सरकार (GOG) और IIM-Ahmedabad के द्वारा दो सप्ताह का प्रशिक्षण दिया जाएगा
- राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में मिलेगा दो सप्ताह का प्रशिक्षण

कार्यक्रम की रुपरेखा

- १ लाख रुपए प्रति माह पारिश्रमिक मिलेगा
- फ़ेलोशिप की अवधि १ वर्ष होगी (मूल्यांकन और आपसी सहमति के साथ इसे अतिरिक्त १ वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है)
- गुजरात सरकार और IIM-Ahmedabad द्वारा संयुक्त रूपसे एक प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा

सरदार पटेल गुड गवर्नेन्स सीएम फेलोशिप प्रोग्राम से जुड़ें और सक्रिय योगदान के साथ गुजरात के विकास में साझेदार बनें

आवेदन की अवधि
दिनांकः १ नवेम्बर, २०२५ से १५ दिसम्बर, २०२५
रात ११:५९ बजे तक

ऑनलाइन आवेदन करने के लिए
https://spipa.gujarat.gov.in

हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी

युवाओं से गुजरात सरकार की दरकार
करिए विकास का सपना साकार

आधुनिक भारत के निर्माता सरदार पटेल को सच्ची श्रद्धांजलि है “एक भारत, श्रेष्ठ भारत”।
- श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

संपादकीय

उम्मीदों पर पानी

आखिरकार, लंबे समय से दिल्ली को प्रदूषण से मुक्त कराने के लिए विकल्प के बड़े दावे के रूप में प्रचारित कृत्रिम बारिश का प्रयोग सिरे नहीं चढ़ सका है। अन्ततः दिल्ली में यह बहु-प्रचारित प्रयोग स्थगित करना पड़ा। बल्कि बारिश की फुहारों के बजाय राजनीतिक घमासान और सवालों की बारिश के रूप में इसकी परिणति हुई। राष्ट्रीय राजधानी के आकाश में छाये जहरीले धुएं को धोने के लिए जो करीब सवा तीन करोड़ रुपये खर्च किए गए, वे बूंदाबांदी भी नहीं नहीं ला सके। इसके बाद न केवल आसमान सूखा रहा बल्कि दिल्ली की उम्मीदें भी सूखी रहीं। इसके इतर प्रदूषण के समाधान के लिए बहुप्रचारित इस प्रयोग के असफल होने के तुरंत बाद आम आदमी पार्टी और सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी में राजनीतिक घमासान शुरू हो गया। इसमें दो राय नहीं कि वैज्ञानिक परीक्षण तार्किकता और अनुकूल परिवेश में ही सिरे चढ़ता है। इसी तरह क्लाउड सीडिंग के लिए जरूरी अनुकूल परिस्थितियों के न होने के तथ्य को गंभीरता से नहीं लिया गया। दरअसल, कृत्रिम बारिश केवल उन्ही परिस्थितियों में फलीभूत होती है जब वातावरण में पर्याप्त नमी हो, आसमान में घने बादल छाए हों तथा हवा का रुख स्थिर बना रहे। दुनिया के कई देशों, मसलन चीन, थाईलैंड और संयुक्त अरब अमीरात में कृत्रिम बारिश के प्रयोग इसलिए सफल हो सके क्योंकि उन्होंने इस प्रयोग को सिरे चढ़ाने के लिये सही समय को चुना था। दिल्ली के शासन-प्रशासन ने इस प्रयोग को अमली जामा पहनाने से पहले इस बात को नजरअंदाज किया कि दिल्ली का आसमान शुष्क है और वातावरण में नमी की कमी है। ऐसे में पर्याप्त आर्द्रता यानी बादलों के पर्याप्त घनत्व के बिना सिल्वर आयोडाइड की लपटें बारिश पैदा नहीं कर सकतीं। ऐसा नहीं हो सकता कि इस विकल्प को सिरे चढ़ाने वाले योजनाकारों को विज्ञान की यह सीमा ज्ञात नहीं थी। फिर भी यदि सरकार आगे बढ़ी तो निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सरकार की प्राथमिकता परिणामों के बजाय इससे मिलने वाले प्रचार को लेकर ज्यादा रही।

ऐसे में एक सवाल यह भी उठता है कि क्या दिल्ली सरकार समस्या के वास्तविक समाधानों की अनदेखी करते हुए कृत्रिम बारिश को सिरे चढ़ाने वाले महंगे विकल्पों पर दांव लगा सकती है? वास्तव में हमें प्रदूषण की जड़ों पर प्रहार करने की जरूरत है। कृत्रिम बारिश एक फौरी विकल्प तो हो सकता है,लेकिन समस्या का अंतिम समाधान नहीं हो सकता। वास्तव में आज जरूरत प्रदूषण उत्सर्जन के स्रोतों को बंद करने की है। दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को दुरुस्त करने की आवश्यकता है ताकि लोग निजी वाहनों का उपयोग कम करें। सरकार की प्राथमिकता वाहनों से होने वाले उत्सर्जन को कम करने, साल भर चलने वाले निर्माण कार्य से उत्पन्न धूल को नियंत्रित करने तथा पर्यावरण अनुकूल मानदंडों को सख्ती से लागू करने की होनी चाहिए। सरकार को चाहिए था कि खर्चीली कृत्रिम बारिश की योजना को सिरे चढ़ाने के बजाय हवा को अधिक प्रभावी ढंग से साफ करने को तरजीह दी जाती। निर्विवाद रूप से यह असफल प्रयोग सत्ताधीशों की एक बड़ी बीमारी को भी दर्शाता है, जो प्रदूषण नियंत्रण को बतौर कारगर नीति लागू करने के बजाय उसके समाधान के प्रयासों को प्रचारित करने की प्रवृत्ति से ग्रसित हैं। दिल्ली की कई सरकारों के कार्यकाल में प्रदूषण नियंत्रण कार्य में प्रगति कम हुई है और विज्ञापनों पर करोड़ों रुपये खर्च करके लोकलुभावनी योजनाओं का ज्यादा प्रचार होता रहा है। ऐसी नीतियों को सिरे चढ़ाने में सख्त अनुशासन की जरूरत है। इसमें दो राय नहीं कि प्रदूषण के संकट का समाधान हेलीकॉप्टरों के जरिये आकाश में रसायन बिखेरने से नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर सुशासन, निरंतर योजना को क्रियान्वित करने और वैज्ञानिक उपायों को सिरे चढ़ाने में दृढ़ता दिखाने से होगा। कृत्रिम बारिश के इस प्रयोग की विफलता के बावजूद भविष्य में ऐसे प्रयोगों से हाथ पीछे खींचना भी उचित नहीं होगा। भले ही इस बार बादलों ने साथ नहीं दिया, लेकिन भविष्य में अनुकूल परिस्थितियां बन सकती हैं। इस प्रयोग का सबक है कि दिल्ली के लाखों लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये वैज्ञानिक संस्थानों और नागरिक एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय के साथ ऐसी योजनाओं को सिरे चढ़ाना चाहिए।

चीन के दुर्लभ खनिज ब्रह्मास्त्र से बेचैन ट्रंप

> "चीन यदि चाहे तो परिष्कृत दुर्लभ खनिजों का निर्यात बंद करके अमेरिका, यूरोप, जापान और भारत समेत पूरी दुनिया के सूचना प्रौद्योगिकी, रक्षा, ऊर्जा, स्वच्छ चिकित्सा और कार उद्योगों को घुटनों पर ला सकता है। परंतु वह जानता है इससे नुकसान उसका भी होगा क्योंकि उसे अपना माल बेचने के लिए इन मंडियों की जरूरत है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप हर छोटे-बड़े देश को अपने टैरिफ़ फ़रमानों से झुकाने या निरुत्तर करने में कामयाब रहे हैं। लेकिन चीन उनकी हर ईंट का जवाब पत्थर से दे रहा है, जिससे हर बार ट्रंप को पीछे हटना पड़ रहा है। ट्रंप इस मुग़ालते में थे कि विश्व की सबसे बड़ी और अमीर अमेरिकी मंडी और सबसे उन्नत तकनीक व्यापार युद्ध में अमोघ अस्त्र का काम करेंगे। लेकिन चीन ने मुक़ाबले के लिए एक ऐसा अस्त्र तैयार कर रखा था जो ब्रह्मास्त्र साबित हुआ। रेयर और क्रिटिकल अर्थ यानी दुर्लभ और अत्यावश्यक खनिजों का अस्त्र, जिसकी इन दिनों पूरे विश्व में चर्चा है। क्या हैं दुर्लभ और अत्यावश्यक खनिज? आजकल क्यों इतनी चर्चा में हैं और इन पर चीन के एकाधिकार की कहानी क्या है?

दुर्लभ और अत्यावश्यक खनिज कम मात्रा में मौजूद होने के कारण दुर्लभ नहीं कहलाते। इनकी मात्रा तो प्रचुर है लेकिन पूरी धरती पर इतने कम घनत्व के साथ फैली हुई है कि इन्हें वाजिब लागत पर निकाल पाना संभव नहीं है। बहुत कम जगहें ऐसी हैं जहां इनका घनत्व खुदाई के लायक मिलता है। ये पृथ्वी के गर्भ से निकलने वाले लावे के साथ सतह पर आते हैं। इसलिए लावे से बनी चट्टानों की सतह पर या उनकी गहराई में मिलते हैं। दूसरी बड़ी समस्या इनकी रेडियोधर्मिता है जो होती तो बहुत कम मात्रा में है लेकिन उसके होने के कारण इनकी खुदाई और शोधन से निकलने वाले मलबे को रिहायशी और कृषि इलाकों से दूर बरसों दबाकर रखना ज़रूरी हो जाता है। बहुत कम जगहों पर पर्याप्त घनत्व के साथ मिलने, शोधन की प्रक्रिया जटिल और ख़र्चीली होने और पर्यावरण पर बुरा असर डालने के कारण ही इन्हें दुर्लभ कहा जाता है।

लगभग समान रासायनिक संरचना वाले 17 दुर्लभ खनिजों को उनके अणुभार के हिसाब से

हल्के और भारी की दो श्रेणियों में बांटा जाता है। कम अणुभार वाले हल्के दुर्लभ खनिजों में नियोडीमियम और प्रैस्योडीमियम की मांग सर्वाधिक है। नियोडीमियम के बिना आपके स्मार्टफ़ोन, बिजली की कारें, लेज़र चिकित्सा उपकरण और एमआरआई स्कैनर नहीं बनाए जा सकते। प्रैस्योडीमियमका प्रयोग विमान इंजन, लक्ष्यभेदी मिसाइल, राडार और ड्रोन जैसे रक्षा सामान में होता है। अधिक अणुभार वाले या भारी दुर्लभ खनिजों में डिस्प्रोज़ियम, इट्रियम और टर्बियम की मांग सबसे अधिक है। डिस्प्रोज़ियम का प्रयोग उन्नत तकनीक और स्वच्छ ऊर्जा की मशीनों में लगने वाले चुंबकों में किया जाता है। इसका ऑक्साइड परमाणु रियेक्टरों को ठंडा रखने के काम आता है। टर्बियम का प्रयोग टीवी स्क्रीन और सॉलिड स्टेट डेटा भंडार बनाने में किया जाता है। इरीट्रियम का प्रयोग भी टीवी स्क्रीनों से लेकर मिश्र धातु तैयार करने जैसे कामों में किया जाता है।

दुर्लभ खनिजों से ही कोबाल्ट, लिथियम, निकल और ग्रेफ़ाइट जैसे अत्यावश्यक श्रेणी के खनिज भी जुड़े हैं जिनके बिना बैटरियां, ऊर्जा भंडार, सौर पैनल, पवन चक्कियां और पनबिजली संयंत्र नहीं बनाए जा सकते। कुल मिलाकर दुर्लभ और अत्यावश्यक खनिजों के बिना स्मार्टफ़ोनों और लैपटॉप से लेकर एआई डेटा केंद्र, बिजली के वाहन, स्वच्छ ऊर्जा और चिकित्सा की आधुनिक मशीनें, लड़ाकू विमान, मिसाइलें, राडार और उपग्रह जैसी कोई भी आधुनिक चीज़ नहीं बन सकती।

दुर्लभ खनिजों के सर्वाधिक भंडार चीन में हैं जहां वे खुदाई के लायक घनत्व में मिलते हैं। उसके बाद ब्राजील, रूस, भारत और ऑस्ट्रेलिया का नंबर आता है। भारत के पास इन खनिजों का अमेरिका और ग्रीनलैंड से लगभग चार गुना भंडार है। लेकिन बड़े भंडार होने से अधिक महत्वपूर्ण है इनकी खुदाई और शोधन की साफ़ और किफ़ायती तकनीक का होना। उससे भी बड़ी बात है इन सब का ऐसी जगह होना जहां खनन और शोधन से लोगों और पर्यावरण पर बुरा असर न पड़े। अमेरिका ने चीन के पच्चीसवें हिस्से से भी कम भंडार होने के बावजूद अपनी दक्षिणी केलीफ़ोर्निया के माउंटेन पास रेगिस्तानी दर्रे की खदान केबल पर आधी सदी तक दुर्लभ खनिजों के बाज़ार पर एकाधिकार रखा। खदान के पूर्व प्रमुख मार्क स्मिथ के अनुसार चीनी खदान उद्यमियों ने इस खान का निरीक्षण करने के लिये 60 के दशक से आना शुरू किया था। फिर 1992 में, जिन दिनों भारत के नेता मंडल और मस्जिद की राजनीति में उलझे थे, चीनी आर्थिक सुधारों के प्रणेता डंग शियाओ पिंग ने इनर मंगोलिया प्रांत की बायन ओबो खदान का निरीक्षण करते हुए कहा था, 'पश्चिम एशिया के पास तेल है तो चीन के पास दुर्लभ खनिज हैं।'

चैयरमैन डंग की दूरदर्शिता और चीनी उद्यमिता के चलते कुछ ही वर्षों के भीतर पूरे चीन में दुर्लभ खनिजों के शोधन कारखानों का जाल सा बिछ गया। कम लागत में खनिज शोधन करके बेचने की गलाकाट प्रतियोगिता ने चीन के दुर्लभ खनिज निर्यातकों को इतना कुशल बना दिया कि अमेरिका की आधी सदी पुरानी खदानें और शोधन कारखाने उनके सामने टिक न सके और ठप हो गए। एक दशक बाद चीन को भी खनिज शोधन से फैलते प्रदूषण और खनिजों की तस्करी को रोकने के लिए छोटे-छोटे शोधन कारखानों को छह बड़े कारोबारों में संगठित करना पड़ा जिन पर सरकार पूरा नियंत्रण रख सके। आज हालत यह है कि विश्व के कच्चे दुर्लभ खनिज उत्पादन में तो चीन की हिस्सेदारी केवल 70 प्रतिशत ही है। पर उसके शोधन में उसकी हिस्सेदारी 90 प्रतिशत से भी ऊपर है।

चीन यदि चाहे तो परिष्कृत दुर्लभ खनिजों का निर्यात बंद करके अमेरिका, यूरोप, जापान और भारत समेत पूरी दुनिया के सूचना प्रौद्योगिकी, रक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, चिकित्सा और कार उद्योगों को घुटनों पर ला सकता है। परंतु वह जानता है इससे नुक़सान उसका भी होगा क्योंकि उसे अपना माल बेचने के लिए इन मंडियों की ज़रूरत है। वैसे भी शी जिनपिंग ट्रंप की तरह तैश में काम नहीं करते। इसलिए उन्होंने अमेरिका की ही तर्ज़ पर यह शर्त लगाई कि हर विदेशी कंपनी को चीनी दुर्लभ खनिजों वाले हर सामान को बेचने से पहले चीन से अनुमति लेनी होगी और यह नियम पहली दिसंबर से लागू हो जाएगा। अमेरिका से उन्नत तकनीक का सामान ख़रीदने वाली कंपनियों को भी उससे बना सामान बेचने से पहले अमेरिका से अनुमति लेनी पड़ती है। चीन का दुर्लभ खनिजों के निर्यात पर शर्तें लगाना उसी का जवाब है। सितंबर 2010 में जापान के साथ हुए समुद्री सीमा-विवाद में चीन ने दो महीने के लिए जापान को दुर्लभ खनिजों का निर्यात बंद कर दिया था जिसके परिणामस्वरूप जापान के इलैक्ट्रॉनिक और वाहन उद्योग घुटनों पर आ गए थे। अब ट्रंप को भी सुलह करने के लिए दक्षिण कोरिया जाकर शी जिनपिंग से मिलना पड़ रहा है।

चीन पर निर्भरता कम करने के लिए अमेरिका, यूरोप और भारत दुर्लभ खनिजों के सुलभ भंडार वाले देशों के साथ समझौते करने और खनिजों का रिसाइकल बढ़ाने के प्रयासों में जुटे हैं। परंतु दुर्लभ खनिजों को खोदना अलग बात है और उनका शोधन व परिष्कार करना अलग। ख़ासकर भारी दुर्लभ खनिजों के परिष्कार के लिए चीन का विकल्प तैयार कर पाना अगले कई साल संभव नहीं लगता।

चीन ने यह एकाधिकार दशकों की कड़ी मेहनत और पर्यावरण की बलि चढ़ाकर हासिल किया है। इसे ऑस्ट्रेलिया, ग्रीनलैंड और यूक्रेन से खुदाई के समझौते करके भी बरसों नहीं तोड़ा जा सकेगा। इससे बेहतर तो यह होगा कि गहन शोध करके इन खनिजों के कृत्रिम विकल्प तैयार किए जाएं। क्या भारत में हर साल तैयार हो रही रसायन शोधकर्ताओं की फौज यह करिश्मा कर पाएगी?

प्रेरणा

अब गुणों का राज्य — आचार्य चतुरसेन शास्त्री का जीवंत उदाहरण जिसने तोड़ी जाति की जंजीरें

सन 1926 की बात है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार और विचारक आचार्य चतुरसेन शास्त्री भागलपुर एक शास्त्रार्थ सम्मेलन की अध्यक्षता करने गए थे। उस समय भारत का समाज गहरे जातिगत बंधनों में जकड़ा हुआ था। ऊँच-नीच, छूआछूत और जातिगत भेदभाव हर व्यक्ति के जीवन का हिस्सा थे। लोग किसी के साथ उसके विचारों या कर्मों के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी जाति देखकर व्यवहार करते थे। लेकिन आचार्य चतुरसेन जैसे कुछ ही महान आत्माएं थीं जो इस अंधविश्वास और सामाजिक असमानता के खिलाफ खड़ी हुईं।

भागलपुर पहुंचने पर आचार्य जी अपने एक पुराने परिचित के घर ठहरे। उस व्यक्ति ने बड़े प्रेम और स्नेह से उनके लिए भोजन की व्यवस्था की — सादा दाल-चावल, सब्जी और रोटी। आचार्य जी ने प्रसन्नतापूर्वक वह भोजन किया और कुछ देर विश्राम करने लगे। थोड़ी ही देर बाद उनके कुछ मित्र वहां पहुंचे। उन्होंने देखा कि आचार्य जी ने पहले ही भोजन कर लिया है तो वे बोले — "आपने हमारे आने से पहले ही खाना खा लिया? हम तो आपके लिए विशेष भोजन की व्यवस्था करने वाले थे।"

आचार्य चतुरसेन मुस्कुराए और सहजता से बोले — "मेरे लिए यहां के गृहस्वामी ने ही भोजन की पूरी व्यवस्था कर दी थी। उनके प्रेम और श्रद्धा को देखकर मैं इंकार नहीं कर सका, इसलिए उनके साथ ही भोजन कर लिया।"

यह सुनते ही उनके मित्रों के चेहरे पर अचरज और असहमति के भाव उभर आए। उनमें से एक ने आश्चर्य से कहा — "आप जानते हैं, यह गृहपति कलाल जाति के हैं। हम तो उनके हाथ का पानी भी नहीं पीते। आपने कैसे उनके हाथ का बना भोजन कर लिया?"

उनके ये शब्द सुनकर आचार्य चतुरसेन का मुखमंडल गंभीर हो उठा। उन्होंने शांत किंतु दृढ़ स्वर में कहा — "मैं जात-पात की परवाह नहीं करता। मेरे लिए मनुष्य की जाति नहीं, उसके गुण मायने रखते हैं। मेरी दृष्टि में यह गृहस्वामी अत्यंत पवित्र और सम्माननीय व्यक्ति हैं। उनकी आत्मा निर्मल है, और उन्होंने मुझसे जो स्नेह दिखाया, वह किसी भी ब्राह्मण या कुलीन से कम नहीं था। मेरी आत्मा उन्हें किसी भी तरह कमतर नहीं मान सकती।"

उन्होंने आगे कहा — "मुझे एक बार नहीं, कई बार चर्मकार जाति के एक विद्वान भाई के हाथ का शरबत पीने का सौभाग्य मिला है। और एक बार मैं स्वयं जमनालाल बजाज के घर में एक ऐसी पंगत में बैठा था, जहां ब्राह्मण, शूद्र, अछूत और मुसलमान सभी साथ-साथ बैठे थे। मैंने उनके साथ भोजन किया, और विश्वास करो, मुझे किसी भी प्रकार की अशुद्धि नहीं लगी। बल्कि उस दिन मुझे लगा कि असली शुद्धता तो मन में होती है, न कि भोजन में या बर्तनों में।"

उनके मित्र मौन हो गए। कोई उत्तर नहीं दे पाया, क्योंकि सत्य का प्रकाश जब फैलता है, तो अंधकार अपने आप मिट जाता है। आचार्य चतुरसेन के इन शब्दों में न केवल तर्क था, बल्कि उस युग का सत्य और आने वाले युग की दिशा भी छिपी थी। उन्होंने कहा — "जाति का बड़प्पन अब लद चुका है, अब गुणों का राज्य है।"

यह वाक्य केवल एक विचार नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का घोष था। उस समय जब समाज जाति की दीवारों से बँटा हुआ था, आचार्य चतुरसेन ने यह कहकर मनुष्य की असली पहचान उसके गुणों, कर्मों और चरित्र से जोड़ दी। उन्होंने दिखाया कि सच्ची श्रेष्ठता व्यक्ति के भीतर होती है — उसकी करुणा, उसकी विद्या, उसके संस्कार और उसके आचरण में।

आचार्य जी का यह दृष्टिकोण उस युग में अत्यंत साहसिक था। क्योंकि जब कोई व्यक्ति समाज की जड़बद्ध परंपराओं के विरुद्ध खड़ा होता है, तो उसे आलोचना, बहिष्कार और विरोध का सामना करना पड़ता है। परंतु उन्होंने यह सब सहते हुए भी सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा। वे जानते थे कि मानवता की असली उन्नति तब होगी, जब मनुष्य मनुष्य के रूप में देखा जाएगा — न कि किसी जाति, धर्म या कुल के पैमाने पर।

यह घटना केवल एक भोजन का प्रसंग नहीं थी, यह उस मानसिक क्रांति की शुरुआत थी जो भारत को आगे चलकर समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के मार्ग पर ले गई। यह सिखाती है कि महानता जन्म से नहीं, बल्कि कर्म और गुणों से प्राप्त होती है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने अपने व्यवहार से यह सिद्ध कर दिया कि जब व्यक्ति सच्चे अर्थों में मनुष्य बन जाता है, तो जाति की दीवारें अपने आप गिर जाती हैं और केवल "गुणों का राज्य" रह जाता है।

एसआईआर की सार्थक पहल का विरोध नहीं, स्वागत हो

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने बिहार के बाद अब देश के 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में विशेष ग्रहण पुनरीक्षण (एसआईआर) की शुरुआत करने की घोषणा करके चुनाव विसंगतियों एवं कमियों को दूर करने का सराहनीय एवं साहसिक कार्य किया है। यह पहल न केवल तकनीकी या प्रशासनिक प्रक्रिया भर है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की जड़ों को और मजबूत करने की एक निर्णायक कोशिश है। लोकतंत्र की आत्मा उसके निर्वाचन तंत्र की निष्पक्षता और पारदर्शिता में बसती है और चुनाव आयोग का यह कदम उसी दिशा में एक ठोस, सकारात्मक और आवश्यक प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए। बिहार की एसआईआर प्रक्रिया से सबक लेते हुए इस बार आयोग ने प्रक्रिया के लिए अधिक समय दिया है, ताकि बिहार जैसी जल्दबाजी और अफरातफरी से बचा जा सके। आधार कार्ड को एक सहायक दस्तावेज़ के रूप में स्वीकार किया जाएगा, जिससे प्रक्रिया सरल बनेगी। निश्चित ही इस बार 12 राज्य संख्या में ज्यादा हैं तो चुनौती भी उसी हिसाब से ज्यादा बड़ी है। उम्मीद कर सकते हैं कि बिहार में पुनरीक्षण प्रक्रिया में आई दिक्कतें अब आयोग के लिए अनुभव का काम करेंगी और वहां जैसी परेशानी बाकी जगहों पर लोगों को नहीं उठानी पड़ेगी। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने एसआईआर के शिड्यूल का ऐलान करते हुए कहा कि प्रक्रिया यह सुनिश्चित करेगी कि कोई भी योग्य मतदाता छूट न जाए और कोई भी अयोग्य मतदाता लिस्ट में शामिल न हो। जिन राज्यों को दूसरे चरण में चुना गया है, उनमें उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, गोवा, केरल, पुडुचेरी, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप हैं, इनमें से केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। असम में भी अगले ही साल विधानसभा चुनाव है, लेकिन उसे दूसरे चरण से बाहर रखा गया। आयोग ने इस बार आधार कार्ड को लेकर रुख पहले ही साफ कर दिया है कि यह जन्म, नागरिकता या निवास प्रमाण पत्र के रूप में मान्य नहीं होगा, लेकिन एसआईआर में इसे एक डॉक्युमेंट के रूप में पेश किया जा सकेगा। यह स्पष्टता इसलिए जरूरी थी, क्योंकि बिहार में पहले चरण के दौरान आधार कार्ड का मसला सुप्रीम कोर्ट तक चला गया था। दस्तावेज ऐसे होने चाहिए, जो अधिकतम आबादी की पहुंच में हों और आधार आज पहचान का सबसे सरल जरिया है।

इसे भी पढ़ें: Jan Gan Man: SIR का स्वागत मगर नीति पर उठा सवाल, 2002-2004 की सूची पर भरोसा क्यों कर रहा है निर्वाचन आयोग?

मतदाता सूची की सटीकता, पारदर्शिता एवं निष्पक्षता लोकतंत्र की रीढ़ है। भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में मतदाता सूची की सटीकता सबसे बड़ी चुनौती है। इसलिये एक निश्चित अन्तराल के बाद एसआईआर की प्रक्रिया होते रहना अपेक्षित है। इसके पहले एसआईआर करीब दो दशक पहले किया गया था। कम से कम अब तो यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि एसआईआर में इतना अंतराल न आने पाए, क्योंकि अब लाखों लोग नौकरी-पेशे के चलते अन्यत्र चले जाते हैं। इनमें से अधिकांश वहीं बस जाते हैं। कई बार देखा गया है कि मृत व्यक्तियों के नाम सूची में बने रहते हैं, वहीं नये पात्र नागरिकों के नाम दर्ज नहीं हो पाते। ग्रामीण इलाकों से लेकर महानगरों तक, इस विसंगति के चलते मतदान प्रतिशत प्रभावित होता है और चुनावी परिणामों की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगता है। एसआईआर का मकसद किसी की नागरिकता तय करना या ज्यादा से ज्यादा लोगों को वोटर लिस्ट से बाहर करना नहीं है। इसे इतना सरल होना चाहिए, जिससे लोग वोटर बनने के लिए प्रेरित हों और उनमें लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व के लिए उत्साह जगे। मुख्य चुनाव आयुक्त की यह पहल-इन खामियों को दूर करने की दिशा में एक संगठित और वैज्ञानिक लोकतांत्रिक प्रयास है। यदि यह कार्य धरातल पर ईमानदारी से लागू हुआ, तो यह मतदाता सूची की पवित्रता और लोकतंत्र की गरिमा दोनों को बढ़ाएगा। भारत जैसे दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिये यह बहुत जरूरी है, इसके लिये राजनीतिक दलों की भूमिका एवं सहयोग अपेक्षित है, वे इस प्रक्रिया को सकारात्मक दृष्टि से लें। इस सराहनीय एवं नितांत अपेक्षित उपक्रम के लिये विपक्षी दलों के द्वारा विरोध का वातावरण बनाना एवं आस्तीनें चढ़ाना उनकी विश्वसनीयता एवं जिम्मेदारी पर प्रश्न खड़ा करता है। अक्सर देखा गया है कि जब चुनाव आयोग सुधारात्मक कदम उठाता है, तो विभिन्न राजनीतिक दल अपने-अपने हितों के अनुसार प्रतिक्रिया देते हैं। परंतु लोकतंत्र का स्वास्थ्य तब ही सुदृढ़ होगा जब सभी दल 'पारदर्शिता' को 'राजनीतिक लाभ-हानि' से ऊपर रखेंगे। विपक्ष को चाहिए कि वह इस पहल का विरोध करने की बजाय स्वागत करे और इसे सही दिशा में लागू कराने में सहयोग दे, न कि शंका और अविश्वास के चश्मे से देखे। बहरहाल, राजनीतिक पार्टियों की यह महती जिम्मेदारी है कि वे सिर्फ दोषारोपण करने तक सीमित न रहें, बल्कि इस पूरी प्रक्रिया में अपनी जिम्मेदारियां निभाएं। इसी तरह, नागरिक संगठनों के लिए भी यह सक्रिय होने का समय है। उनकी निगरानी बीएलए के काम को अधिक सरल व सटीक बना सकती है। कुल मिलाकर पूरे देश में एक साथ चुनाव कराने का सपना दिखाने वाले चुनाव आयोग के सामने अभी अपनी इस प्राथमिक जिम्मेदारी को ही निर्विवाद रूप से पूरा करने की चुनौती है।

डिजिटल युग में चुनाव सुधार केवल मानव संसाधन या प्रशासनिक इच्छाशक्ति का नहीं, बल्कि तकनीकी पारदर्शिता का भी प्रश्न है। बायोमेट्रिक सत्यापन, ऑनलाइन नामांकन और डेटा क्रॉस-वेरिफिकेशन जैसे उपाय अब आवश्यक हो चुके हैं।

अभियान

अर्जुन के पास था वह दिव्य अस्त्र, जिससे एक ही दिन में समाप्त हो सकता था महाभारत का युद्ध

महाभारत केवल एक युद्ध नहीं था, वह धर्म और अधर्म के बीच का वह महायुद्ध था जिसने सम्पूर्ण मानव सभ्यता को यह सिखाया कि नीति, सत्य और धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष आवश्यक है, भले ही वह अपने ही संबंधियों के विरुद्ध क्यों न हो। यह युद्ध कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि पर लड़ा गया, जहाँ कौरवों और पांडवों के बीच 18 दिनों तक भयंकर संघर्ष चला। इस युद्ध में असीम शक्ति, नीति, कूटनीति और दिव्य अस्त्रों का प्रयोग हुआ, जिनकी महिमा आज भी रहस्य और श्रद्धा का विषय है।

इस युद्ध में अर्जुन, जो स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के सखा और भक्त थे, न केवल अपने समय के महान धनुर्धर थे, बल्कि उन्हें दिव्य अस्त्रों की प्राप्ति भी थी। उन्हीं में से एक था पाशुपतास्त्र, जो भगवान शिव का सबसे शक्तिशाली और विनाशकारी अस्त्र माना जाता है। यह ऐसा अस्त्र था कि यदि अर्जुन इसे प्रयोग कर देते, तो महाभारत का युद्ध केवल एक ही दिन में समाप्त हो जाता। किंतु अर्जुन ने इसे प्रयोग नहीं किया — और यही निर्णय उन्हें केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि धर्म के रक्षक के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

पाशुपतास्त्र की प्राप्ति अर्जुन ने किसी साधारण तपस्या से नहीं, बल्कि भगवान

शिव को प्रसन्न करके की थी। कथा के अनुसार, जब अर्जुन ने वनवास के दौरान इंद्र के आदेश पर दिव्य अस्त्रों की साधना शुरू की, तब भगवान शिव ने उनका परीक्षण करने हेतु किरात रूप में उनके समक्ष प्रकट होकर उनसे युद्ध किया। जब अर्जुन ने समर्पण, भक्ति और पराक्रम से शिवजी को प्रसन्न किया, तब उन्होंने उन्हें अपना सर्वोच्च अस्त्र — पाशुपतास्त्र — प्रदान किया।

कहा जाता है कि पाशुपतास्त्र में ऐसी महाशक्ति थी कि इससे संपूर्ण पृथ्वी, आकाश और जलमंडल का विनाश संभव था। यह अस्त्र न केवल जीवों को भस्म कर देता था, बल्कि तत्वों तक को नष्ट कर सकता था। यदि अर्जुन इस अस्त्र का प्रयोग करते, तो महाभारत का युद्ध क्षणभर में समाप्त हो जाता, परंतु साथ ही सम्पूर्ण सृष्टि पर प्रलय छा जाती। अर्जुन धर्म और मर्यादा के प्रतीक थे, उन्होंने यह भली-भांति समझ लिया था कि विजय तभी सार्थक है जब वह धर्म की मर्यादा के भीतर हो। इसीलिए उन्होंने इस अस्त्र को कभी रणभूमि में नहीं चलाया।

महाभारत के युद्ध में केवल पाशुपतास्त्र ही नहीं, बल्कि अनेक दिव्य अस्त्रों का उल्लेख मिलता है, जो देवताओं की शक्तियों के प्रतीक थे। उनमें से कुछ प्रमुख अस्त्र थे —

ब्रह्मास्त्रः यह सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी का दिव्य अस्त्र था। इसे चलाने वाला यदि ध्यान और मंत्र से इसे नियंत्रित न करे, तो यह सम्पूर्ण सृष्टि का संतुलन बिगाड़ सकता था। महाभारत में भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, अर्जुन और अश्वत्थामा जैसे वीरों को इसका ज्ञान था। युद्ध के अंतिम दिनों में जब अश्वत्थामा ने इस अस्त्र को चलाया, तो इसका प्रभाव इतना भयानक था कि भगवान कृष्ण को स्वयं हस्तक्षेप करना पड़ा।

नारायणास्त्रः यह भगवान विष्णु की शक्ति का प्रतिरूप माना जाता है। इसका उपयोग केवल वही कर सकता था जो विष्णु का अनुग्रहीत भक्त हो। जब यह अस्त्र चलाया जाता, तो इससे निकलने वाली अग्नि और बाण शत्रु की सेना को भस्म कर देते, और इससे बचाव का एकमात्र उपाय था — समर्पण। यदि कोई हथियार डाल देता, तो यह अस्त्र उसे नहीं छूता। महाभारत में अश्वत्थामा ने इस अस्त्र का प्रयोग अपने पिता द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद पांडवों से बदला लेने हेतु किया था।

आग्नेयास्त्र और वासवी शक्तिः ये भी अत्यंत प्रचंड अस्त्र माने जाते हैं। आग्नेयास्त्र अग्निदेव की शक्ति से युक्त था, जिससे सम्पूर्ण सेना को अग्निज्वालाओं में झोंका जा सकता था। वहीं वासवी शक्ति इंद्रदेव का वरदान थी, जो कर्ण को प्राप्त हुई थी। इस अस्त्र का उपयोग केवल एक बार किया जा सकता था, और कर्ण ने इसे अंततः घटोत्कच पर चलाया था।

महाभारत का युद्ध केवल बल और अस्त्रों की परीक्षा नहीं थी, बल्कि यह एक महान धर्मसंकट का प्रतीक था — जहाँ प्रत्येक योद्धा को यह निर्णय लेना था कि विजय क्या केवल शस्त्रों से प्राप्त होती है, या धर्म और संयम से। अर्जुन का पाशुपतास्त्र न चलाना इस बात का प्रमाण है कि सच्चा योद्धा वही है जो अपनी शक्ति को मर्यादा में रखे।

अर्जुन का यह संयम, उनकी करुणा और धर्मनिष्ठा उन्हें इतिहास के सबसे श्रेष्ठ योद्धाओं की श्रेणी में स्थापित करती है। उन्होंने सिद्ध किया कि जब शक्ति को धर्म का मार्गदर्शन प्राप्त हो, तभी वह कल्याणकारी होती है।

इस प्रकार महाभारत का युद्ध केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक प्रतीक है — जहाँ अर्जुन की धनुष की डोरी पर केवल बाण नहीं, बल्कि धर्म, नीति और मानवता की डोर भी बंधी हुई थी। और जब उन्होंने पाशुपतास्त्र जैसे महाशक्तिशाली अस्त्र को चलाने से स्वयं को रोका, तब उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को यह सिखाया कि सच्ची विजय शक्ति से नहीं, संयम और धर्म से होती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

राष्ट्रीय एकता दिवस
31 अक्टूबर 2025

गुजरात सरकार | Ministry of Home Affairs Government of India | STATUE OF UNITY एक भारत, श्रेष्ठ भारत.

150वीं जन्म जयंती पर
लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को शत् शत् नमन

राष्ट्रीय एकता दिवस 2025

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सरदार पटेल को पुष्पांजलि और राष्ट्र को संबोधन

विभिन्न कार्यक्रम:

- एकता परेड
- ब्रास बैंड की प्रस्तुति
- हॉर्स,डॉग और कैमल कंटिंजेंट प्रदर्शनी
- महिलाओं द्वारा मार्शल आर्ट प्रदर्शन
- सीमा सुरक्षा बल द्वारा डॉग शो
- डेर डेविल राइडर्स शो
- स्कूल बैंड प्रस्तुति
- भारतीय वायु सेना द्वारा एयर शो
- सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन चरित्र पर आधारित नाटक " लौह पुरुष "
- एकता प्रकाश पर्व
- भारत पर्व के उपलक्ष में 1 से 15 नवम्बर राज्यों की प्रदर्शनी

" सरदार पटेल ने हमें 'एक भारत' दिया,
उसे 'श्रेष्ठ भारत' बनाना हमारी जिम्मेवारी हैं "
– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

दिनांक: 31 अक्टूबर, 2025 शुक्रवार | **समय:** प्रातः 07:00 बजे से
स्थल: परेड़ ग्राउंड, स्टैचू ऑफ यूनिटी एकता नगर, गुजरात.

कार्यक्रम का जीवंत प्रसारण डीडी न्यूज चेनल पर DD NEWS

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, एकता नगर में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना का उत्सव

▸▸ स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, एकता नगर में सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती का भव्य उत्सव

▸▸ भारत पर्व 2025 (1 से 15 नवंबर) - 15 दिन के लिए एक ही स्थान पर भारत की विविधता में एकता को दर्शाने वाली संस्कृति की झलक

▸▸ 15 दिन के कार्यक्रम के मुख्य घटक : 100 फूड, हस्तकला तथा हथकरघा स्टॉल, विभिन्न राज्यों के पैवेलियन एवं 28 राज्यों व 8 केंद्रशासित प्रदेशों की सांस्कृतिक प्रदर्शनियाँ

▸▸ 15 नवंबर : स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में भगवान बिरसा मुंडा जयंती का भव्य उत्सव

▸▸ 16 व 17 नवंबर : उत्सव के समापन अवसर पर एकता नगर में साइक्लोथॉन इवेंट आयोजित होगी। विभिन्न राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, केबिनेट मंत्री तथा केन्द्र सरकार के प्रतिनिधि, साथ ही विख्यात कलाकार, कारीगर एवं विशेष अतिथि इस 15 दिनों के उत्सव के विभिन्न दिनों में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : कल यानी 31 अक्टूबर शुक्रवार को सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में गुजरात में एकता नगर में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार तथा गुजरात सरकार के सहयोग से 'राष्ट्रीय एकता दिवस' समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। इस उत्सव के साथ ही; आगामी 1 से 15 नवंबर, 2025 के दौरान एकता नगर में सरदार वल्लभभाई पटेल की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के परिसर में 'भारत पर्व 2025' का आयोजन किया गया है। इस भारत पर्व के दौरान देश की विविधता में एकता की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले विभिन्न सांस्कृतिक एवं देशभक्ति के कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को उजागर करेंगे। उल्लेखनीय है कि भारत पर्व कार्यक्रम पहली बार दिल्ली से बाहर गुजरात में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में एकतागर में आयोजित हो रहा है।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय तथा गुजरात सरकार के पर्यटन विभाग एवं युवा सेवा सांस्कृतिक गतिविधियों के विभाग के सहयोग से सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एकता नगर में भारत पर्व 2025 भव्य रूप से मनाया जाएगा। यह कार्यक्रम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को प्रस्तुत करेगा। इस अवसर पर अनेकता में एकता दर्शाने वाले विभिन्न सांस्कृतिक एवं देशभक्ति के कार्यक्रम आयोजित होंगे।

विभिन्न कार्यक्रम

1 – 15 नवंबर 2025 – भारत पर्व 2025

भारत पर्व के विषय में :

भारत पर्व हर वर्ष आयोजित होने वाला एक वार्षिक कार्यक्रम है; जो भारत की विभिन्न सांस्कृतिक विरासत, खाद्य परंपरा एवं कलात्मक कौशल्य को दर्शाता है तथा राष्ट्रीय एकता व सामूहिक गौरव का संदेश देता है।

इस वर्ष यह कार्यक्रम सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के साथ सुसंगत है और इस बार का भारत पर्व भारत की विविधता, एकता व शक्ति का उत्सव मनाने वाले एक भव्य उत्सव-समारोह के रूप में एक आइकॉनिक पर्यटन स्थल स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में मनाया जाएगा। विभिन्न राज्य सरकारों तथा केन्द्र सरकार के जन प्रतिनिधि, साथ ही विख्यात कलाकार, कारीगर तथा विशेष अतिथि इस 15 दिवसीय उत्सव के विभिन्न दिनों में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे।

मुख्य आकर्षण :

▸▸ प्रतिदिन शाम को स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में डैम व्यू पॉइंट 1, वैली ऑफ फ्लॉवर के पास बनाए गए सांस्कृतिक मंच पर दो अलग-अलग राज्यों की जोड़ी में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, जो उन राज्यों की अनूठी परंपरा व कला फॉर्म्स को प्रदर्शित करेंगी। 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा जयंती उत्सव के लिए विशेष प्रस्तुति आयोजित होगी।

▸▸ स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में जंगल सफारी के पास विभिन्न राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों के व्यंजन परोसने वाले 45 फूड स्टॉल तथा एक लाइव स्टूडियो किचन का आयोजन।

▸▸ स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में जंगल सफारी के पास 55 हस्तकला स्टॉल, जो भारत के विभिन्न राज्यों की विविधतापूर्ण एवं नवीन हस्तकला प्रदर्शित करेंगे।

▸▸ स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में जंगल सफारी के पास भारत दर्शन पैवेलियन में विभिन्न राज्यों के पैवेलियन बनाए गए हैं, जो उनके प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों तथा सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रदर्शित करेंगे।

16 – 17 नवंबर 2025 – स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में साइक्लोथॉन

उत्सव के समापन अवसर पर स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में साइक्लोथॉन इवेंट आयोजित होगी।

▸▸ 16 नवंबर : साइकलिंग फन राइड।

▸▸ 17 नवंबरः साइकलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया तथा स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट ऑफ गुजरात के सहयोग से साइक्लोथॉन प्रतियोगिता आयोजित होगी, जिसमें देशभर से लगभग 5,000 साइकिल चालक भाग लेंगे।

1 से 14 नवंबर के दौरान निम्नानुसार विभिन्न राज्यों के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे :

1 नवंबर – गुजरात
2 नवंबर – तमिलनाडु, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख
3 नवंबर – पंजाब, आंध्र प्रदेश
4 नवंबर – हिमाचल प्रदेश, केरल
5 नवंबर – उत्तराखंड, कर्नाटक
6 नवंबर – हरियाणा, तेलंगाना
7 नवंबर – राजस्थान, असम
8 नवंबर – महाराष्ट्र, ओडिशा, पश्चिम बंगाल
9 नवंबर – गोवा, झारखंड
10 नवंबर – दिल्ली, सिक्किम, छत्तीसगढ़
11 नवंबर – मध्य प्रदेश, मणिपुर, नगालैंड
12 नवंबर – उत्तर प्रदेश, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश
13 नवंबर – बिहार, त्रिपुरा, मिजोरम
14 नवंबर – चंडीगढ़, पुडुचेरी, दमण, दीव एवं दादरा नगरहवेली, लक्षद्वीप, अंडमान व निकोबार

पश्चिम रेलवे मना रही है सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2025

(जीएनएस)। पहली तस्वीर में बॉम्बे उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश (सेवानिवृत्त) श्री पृथ्वीराज के. चव्हाण मुख्य भाषण देते हुए दिखाई दे रहे हैं। दूसरी तस्वीर में श्री चव्हाण, पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता, पश्चिम रेलवे के अपर महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार और पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री कुलदीप कुमार जैन "सतर्कता बुलेटिन - 2025" का विमोचन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। तीसरी तस्वीर पश्चिम रेलवे की सांस्कृतिक टीम द्वारा प्रस्तुत नाटक की है। पश्चिम रेलवे पर 27 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक "सतर्कताः हमारी साझा ज़िम्मेदारी" विषय पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जा रहा है। इस जागरूकता सप्ताह का उद्देश्य लोक प्रशासन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना है, साथ ही भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण को बढ़ावा देने में कर्मचारियों और जनता की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना है। सप्ताह

भर चलने वाले इस आयोजन के अंतर्गत नैतिक आचरण और सुशासन के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और जनजागरण गतिविधियाँ आयोजित की गईं। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 30 अक्टूबर, 2025 को मुख्यालय कार्यालय, चर्चगेट में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य भाषण मुख्य अतिथि, बॉम्बे उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश (सेवानिवृत्त) श्री पृथ्वीराज के. चव्हाण ने दिया। कार्यक्रम के दौरान श्री चव्हाण द्वारा पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता, अपर महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार और वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री कुलदीप कुमार जैन के साथ मिलकर "सतर्कता बुलेटिन - 2025" विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में पश्चिम रेलवे की सांस्कृतिक टीम द्वारा "चाय पानी" नामक एक आकर्षक नाटक भी प्रस्तुत किया गया, जिसमें सार्वजनिक सेवा में ईमानदारी और पारदर्शिता के महत्व पर प्रभावी ढंग से प्रकाश डाला गया।

पूरे सप्ताह के दौरान पश्चिम रेलवे के सभी मंडलों, कारखानों और क्षेत्रीय इकाइयों में विभिन्न गतिविधियाँ और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं ताकि सहभागी सतर्कता को बढ़ावा दिया जा सके और यह संदेश दिया जा सके कि सतर्कता प्रत्येक व्यक्ति की साझा जिम्मेदारी है।

वडोदरा हवाई अड्डे पर प्रधानमंत्री का ऊष्मापूर्ण स्वागत

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी राष्ट्रीय एकता दिवस तथा सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में सहभागी होने के लिए गुजरात आए हैं। प्रधानमंत्री गुरुवार को वडोदरा हवाई अड्डे पहुँचे, जहाँ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल सहित महानुभावों द्वारा उनका ऊष्मापूर्ण स्वागत किया गया। इसके बाद प्रधानमंत्री एकता नगर में विकास कार्यों के शिलान्यास-लोकार्पण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए रवाना हुए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी वहाँ रात्रि विश्राम कर दूसरे दिन यानी शुक्रवार को राष्ट्रीय एकता दिवस तथा सरदार वल्लभभाई पटेल के 150वें जयंती समारोह में उपस्थित रहेंगे। वडोदरा हवाई अड्डे पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, महापौर श्रीमती पिंकीबेन सोनी, पुलिस आयुक्त श्री नरसिंहा कोमार, जिला कलेक्टर श्री अनिल धामेलिया ने उपस्थित रहकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

राजकोट-महबूबनगर और ओखा-मदुरै के बीच चलायी जाएंगी फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनें

टिकटों की बुकिंग 1 नवम्बर से

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए और राजकोट-महबूबनगर और ओखा-मदुरै के बीच विशेष किराये पर फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया गया है। इन स्पेशल ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

1. ट्रेन नंबर 09575/09576 राजकोट-महबूबनगर साप्ताहिक स्पेशल (4-4 फेरे)

ट्रेन नंबर 09575 राजकोट-महबूबनगर स्पेशल 3 नवम्बर 2025 से लेकर 24 नवम्बर 2025 तक की अवधि के दौरान प्रति सोमवार को राजकोट से 13.45 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 20.00 बजे महबूबनगर पहुंचेंगी। वापसी में ट्रेन नंबर 09576 महबूबनगर-राजकोट स्पेशल 4 नवम्बर 2025 से लेकर 25 नवम्बर 2025 तक की अवधि के दौरान प्रति मंगलवार को महबूबनगर से 23.00 बजे प्रस्थान करेगी और गुरुवार को 05.00 बजे राजकोट पहुंचेंगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में वांकानेर, सुरेंद्रनगर, अहमदाबाद, नडियाद, आणंद, वडोदरा, उधना, नंदुरबार, जलगांव, भुसावल, अकोला, वाशिम, हिंगोली, बसमत, पूर्णा, नांदेड़, मुदखेड़, धरमाबाद, बासर, निजामाबाद, कामारेड्डी, मेडचल, काचीगुड़ा, शादनगर और जडचर्ला स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में सेकंड एसी, थर्ड एसी, सेकंड स्लीपर और जनरल कोच रहेंगे।

2. ट्रेन नंबर 09520/09519 ओखा-मदुरै साप्ताहिक स्पेशल (4-4 फेरे)

ट्रेन संख्या 09520 ओखा-मदुरै स्पेशल 3 नवम्बर 2025 से लेकर 24 नवम्बर 2025 तक की अवधि के दौरान प्रति सोमवार को ओखा से 22.00 बजे प्रस्थान करेगी और गुरुवार को 11.40 बजे मदुरै पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 09519 मदुरै-ओखा स्पेशल 7 नवम्बर 2025 से लेकर 28 नवम्बर 2025 तक की अवधि के दौरान प्रति शुक्रवार को मदुरै से 04.00 बजे रवाना होगी और रविवार को 10.20 बजे ओखा पहुंचेगी।यह ट्रेन दोनों दिशाओं में द्वारका, जामनगर, राजकोट, सुरेन्द्रनगर, अहमदाबाद, नडियाद, आणंद, वडोदरा, भरूच, उधना, नंदूरबार, आमलनेर, जलगांव, भुसावल, अकोला, पूर्णा, एच साहिब नांदेड़, निजामाबाद, काचीगुडा, महबूबनगर, डोन, गूटी, रेनीगुंटा, काटपाडी, वैल्लोर छावनी, तिरुवन्नामलाई, विलुपुरम, श्रीरंगम, तिरुचिरापल्ली, मणप्पारै, डिंडीगुल एवं कोडाईकनाल रोड स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में सेकंड एसी, थर्ड एसी, सेकंड स्लीपर और जनरल कोच रहेंगे। ट्रेन नंबर 09575 राजकोट-महबूबनगर स्पेशल और ट्रेन नंबर 09520 ओखा-मदुरै स्पेशल की बुकिंग 1 नवम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के स्टोपेज, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अहमदाबाद में यूनिटी मार्च को रवाना करेंगे

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा यूनिटी मार्च और एकता शपथ का आयोजन

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में शुक्रवार, 31 अक्टूबर को अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) की ओर से आयोजित 'सरदार@150 यूनिटी मार्च' को रवाना करेंगे। अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के अवसर पर 'एक भारत, आत्मनिर्भर भारत' के संदेश को और भी मजबूत करने के लिए इस यूनिटी मार्च का आयोजन किया गया है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

सुबह 7.30 बजे सरदार पटेल कॉलोनी, नारणपुरा स्थित सरदार पटेल की प्रतिमा से यूनिटी मार्च को रवाना करेंगे। यह यूनिटी मार्च नारणपुरा सरदार पटेल कॉलोनी से शुरू होकर सरदार पटेल स्टेडियम रोड और सीजी रोड होते हुए आश्रम रोड पर महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर समाप्त होगा।

इस यूनिटी मार्च में महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन, राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, सांसद, विधायक, उप महापौर श्री जतिन पटेल, मनपा स्थाई समिति के अध्यक्ष श्री देवांग दाणी, मनपा शासक पक्ष के नेता श्री गौरांग प्रजापति, दंडक श्रीमती शीतल डागा, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, पार्षदगण, नागरिक, युवा, विद्यार्थी और खेल प्रेमी उपस्थित रहेंगे।

पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस एवं जोधपुर,के बीच चलाएगी एक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन,ट्रेन संख्या 09007/09008 वलसाड-खातीपुरा के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा त्योहारी सीज़न दौरान उनकी यात्रा माँग को पूरा करने के उद्देश्य से बांद्रा टर्मिनस एवं जोधपुर स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर एक स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी। इसके अलावा, ट्रेन संख्या 09007/09008 वलसाड-खातीपुरा के फेरों को मौजूदा समय, ठहराव और संरचना के अनुसार विस्तारित किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः-

1. ट्रेन संख्या 04834/04833 बांद्रा टर्मिनस – जोधपुर सुपरफास्ट स्पेशल [02 फेरे]

ट्रेन संख्या 04834 बांद्रा टर्मिनस – जोधपुर सुपरफास्ट स्पेशल सोमवार, 03 नवम्बर, 2025 को बांद्रा टर्मिनस से 10:00 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 11:25 बजे जोधपुर पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04833 जोधपुर – बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल, रविवार 02 नवम्बर, 2025 को जोधपुर से 06:45 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 07:00 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाड, नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, रतलाम, नागदा, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा, सवाई माधोपुर, वनस्थली निवाई, दुर्गापुरा, जयपुर, आसलपुर जोबनेर, फुलेरा, कुचामन सिटी, मकराना, डेगाना और मेड़ता रोड स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, एसी-2 टियर, एसी-3 टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

2. ट्रेन संख्या 09007/09008 वलसाड-खातीपुरा साप्ताहिक स्पेशल के फेरे विस्तारित [02 फेरे]

ट्रेन संख्या 09007 वलसाड-खातीपुरा स्पेशल के फेरों को 27 नवम्बर, 2025 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09008 खातीपुरा-वलसाड स्पेशल के फेरों को 28 नवम्बर, 2025 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 04834 और ट्रेन संख्या 09007 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 01 नवम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से गांधीनगर में भारत में इटली के राजदूत श्री एंटोनियो बार्टोली ने की शिष्टाचार भेंट

▸▸ मैन्युफैक्चरिंग, स्पोर्ट्स इंडस्ट्रीज, फूड प्रोसेसिंग, वेस्ट टू एनर्जी, स्पेस, साइंस एंड टेक्नोलॉजी, कनेक्टिविटी और स्मार्ट मोबिलिटी के क्षेत्रों में आपसी सहभागिता की संभावनाओं पर हुई चर्चा

▸▸ गुजरात ने पॉलिसी ड्रिवन स्टेट और मैन्यूफैक्चरिंग हब बनने के साथ ही प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत@2047' के संकल्प के लिए 'लिविंग वेल, अर्निंग वेल' के लक्ष्य के साथ 'विकसित गुजरात@2047' का रोडमैप तैयार किया है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ इटली के राजदूत ने गुजरात के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल को इटली आने का आमंत्रण दिया

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत-इटली के द्विपक्षीय संबंध और अधिक मजबूत बने हैं

(जीएनएस)। गांधीनगर : इटली के राजदूत श्री एंटोनियो बार्टोली ने गुरुवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार मुलाकात की।

उन्होंने यूरोप में दूसरे सबसे बड़े इंडस्ट्रियल पावरहाउस इटली की मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में विशेषज्ञता के संदर्भ में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ इस मुलाकात के दौरान भारत में मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में प्रसिद्ध गुजरात में विभिन्न क्षेत्रों में परस्पर भागीदारी की संभावनाओं के बारे में सार्थक परामर्श किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इटली के राजदूत के गुजरात के पहले दौरे में उनका स्वागत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत@2047' के संकल्प को पूरा करने के लिए गुजरात 'विकसित गुजरात@2047' के रोडमैप के साथ अगुवाई करने को प्रतिबद्ध है।

इस संदर्भ में उन्होंने इटली के राजदूत श्री एंटोनियो बार्टोली को अधिक जानकारी देते हुए कहा कि गुजरात ने पॉलिसी ड्रिवन स्टेट और देश का मैन्युफैक्चरिंग हब बनने के साथ ही 'विकसित गुजरात@2047' के रोडमैप में 'लिविंग वेल, अर्निंग वेल' यानी बेहतर जीवन, बेहतर कमाई के लक्ष्य के साथ राज्य की आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक प्रगति के नए मील के पत्थर स्थापित करने का दृष्टिकोण अपनाया है।

इटली के राजदूत ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मजबूत हुए भारत-इटली के द्विपक्षीय संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के इटली दौरे के दौरान डिफेंस, साइंस एंड टेक्नोलॉजी, स्पेस, क्लीन एनर्जी, इनोवेशन और मोबिलिटी लिंकेज पर फोकस करके दोनों देशों के बीच सहयोग का विस्तार करने पर बनी सहमति के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि भारत और इटली ने प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग के सेतु को सुदृढ़ बनाने के लिए 10 मुद्दों का जॉइंट स्ट्रैटेजिक एक्शन प्लान तैयार किया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भी इस एक्शन प्लान के संबंध में गुजरात के साथ सुसंगत क्षेत्रों में इटली-गुजरात के सहयोग के विषय में विचार-विमर्श किया।

उन्होंने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ मैन्युफैक्चरिंग, स्पोर्ट्स इंडस्ट्रीज, फूड प्रोसेसिंग, वेस्ट टू एनर्जी, स्पेस, साइंस एंड टेक्नोलॉजी, इनोवेशन, कनेक्टिविटी, स्मार्ट मोबिलिटी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा शिक्षा जैसे क्षेत्रों में गुजरात के साथ सहभागिता की परस्पर उज्ज्वल संभावनाओं को लेकर विचार विमर्श किया।

इटली के राजदूत श्री एंटोनियो बार्टोली ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल को इटली-गुजरात के संबंधों को और भी व्यापक स्तर पर विकसित करने और आपसी समान हित के क्षेत्रों का अध्ययन करने के लिए गुजरात के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल को इटली की यात्रा पर आने का आमंत्रण भी दिया।

इस शिष्टाचार भेंट के दौरान मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव श्री एम.के. दास, उद्योग विभाग की प्रधान सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह और उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप भी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय एकता दिवस की पूर्व संध्या पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एकता नगर में 1220 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात दी

▸▸ प्रधानमंत्री ने भारत रत्न सरदार पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर 150 रुपए का स्मारक सिक्का और विशेष डाक टिकट का अनावरण किया

▸▸ नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के कलाकारों ने सरदार साहब की जीवन-दर्शन पर आधारित नाटिका का सुंदर मंचन किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : राष्ट्रीय एकता दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' परिसर की पर्यटन आकर्षण परियोजनाओं और स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स सहित 1220 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की भेंट दी। उन्होंने इस अवसर पर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करने वाले रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लिया।

वडोदरा से एकता नगर पहुंचने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सीधे डैम व्यू पॉइंट गए, जहां उन्होंने सबसे पहले भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा प्रचलन में लाए जाने वाले 150 रुपए के स्मारक सिक्के और विशेष डाक टिकट का अनावरण किया। इसके बाद, उन्होंने उपरोक्त विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण किया। उनके साथ मुख्य सचिव श्री पंकज जोशी और सरदार सरोवर नर्मदा निगम लिमिटेड (एसएसएनएनएल) के चेयरमैन श्री मुकेश पुरी भी मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री ने जिन परियोजनाओं का शिलान्यास किया, उनमें 367.25 करोड़ रुपए की लागत से भारतीय शाही राज्य संग्रहालय, 140.45 करोड़ रुपए की लागत से विजिटर्स सेंटर, 90.46 करोड़ रुपए के खर्च से वीर बालक उद्यान, 27.43 करोड़ रुपए के खर्च से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में ट्रैवलेटर का एक्सटेंशन, 23.60 करोड़ रुपए के खर्च से स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, 22.29 करोड़ रुपए के खर्च से 24 मीटर चौड़ी एकता नगर कॉलोनी रोड, 12.50 करोड़ रुपए के खर्च से जेटी डेवलपमेंट, 3.48 करोड़ रुपए के सेंट्रस इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स के बैरेक्स, 12.50 करोड़ रुपए के खर्च से शूलपाणेश्वर मंदिर के पास जेटी विकास, 12.85 करोड़ रुपए के खर्च से वर्षा वन जैसे महत्वपूर्ण विकास कार्य शामिल हैं।

प्रधानमंत्री ने जिन परियोजनाओं का उद्घाटन किया उनमें एकता नगर में 56.33 करोड़ रुपए की लागत से स्टाफ क्वार्टर्स, 303 करोड़ रुपए की लागत से बिरसा मुंडा भवन, 54.65 करोड़ रुपए के खर्च से हॉस्पिटैलिटी डिस्ट्रिक्ट (फेज-1), 30 करोड़ रुपए की लागत से 25 ई-बसें, 20.72 करोड़ रुपए के खर्च से सतपुड़ा प्रोटेक्शन वॉल तथा रिवरफ्रंट, 18.68 करोड़ रुपए के खर्च से वामन वृक्ष वाटिका (बोनसाई गार्डन), 8.09 करोड़ रुपए के खर्च से वॉक-वे (फेज-2), 5.55 करोड़ रुपए का एप्रोच रोड, 5.52 करोड़ रुपए के खर्च से ई-बस चार्जिंग डिपो, 4.68 करोड़ रुपए के खर्च से स्मार्ट बस स्टॉप (फेज-2), 3.18 करोड़ रुपए के खर्च से सीसी रोड, 1.48 करोड़ रुपए के खर्च से डैम रेप्लिका एंड गार्डन, 1.09 करोड़ रुपए के खर्च से एसबीबी गार्डन शामिल हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत दृश्य-श्रव्य माध्यम से सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन-दर्शन पर आधारित नाटिका की प्रस्तुति से हुई, जिसमें सरदार पटेल की बाल्यावस्था के साहस, स्कूल में किताबों की बढ़ी कीमत पर विरोध, पत्नी के निधन की खबर आने के बावजूद अदालत में बहस जारी रखना, अहमदाबाद और बारडोली के आंदोलन, तिलक-गांधी जी मिलन तथा जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर सहित अन्य रियासतों के विलीनीकरण सहित दूसरी ऐतिहासिक घटनाओं को दिखाया गया। इसके साथ ही 'ना देंगे धान, ना ही देंगे लगान' जैसे जोशपूर्ण गीत के साथ नाटक का शानदार मंचन किया गया। नाटक के समापन पर प्रेक्षकों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इसका स्वागत किया। इस कार्यक्रम में सुरक्षा बलों के वरिष्ठ अधिकारियों और सेना के जवानों सहित कई अधिकारी उपस्थित रहे।